Code No. 1752

CLASS : 11th (Eleventh) **Series : 11-April/2021**

रोल नं० ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

उत्तर मध्यमा (प्रथम वर्ष) संस्कृत व्याकरणम् भाग-2 कोड 1102 (आर्ष पद्धति)

(Only for Fresh/School Candidates)

समय : $2\frac{1}{2}$ *घण्टे]* *[पूर्णांक :* ***80***

- *कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ* ***8*** *तथा प्रश्न* ***4*** *हैं।*
- *प्रश्न-पत्र में सबसे ऊपर दिये गये* ***कोड नम्बर*** *को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख्य-पृष्ठ पर लिखें।*
- *कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।*
- *उत्तर-पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना/ पन्ने न छोड़ें।*
- *उत्तर-पुस्तिका के अतिरिक्त कोई अन्य शीट नहीं मिलेगी। अतः आवश्यकतानुसार ही लिखें और लिखा उत्तर न काटें।*
- *परीक्षार्थी अपना रोल नं० प्रश्न-पत्र पर अवश्य लिखें।*
- *कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि प्रश्न-पत्र पूर्ण व सही है,* ***परीक्षा के उपरान्त इस सम्बन्ध में कोई भी दावा स्वीकार नहीं किया जायेगा।***

निर्देशः *सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।*

भाग 'क'

(वस्तुनिष्ठात्मकः प्रश्नाः)

1. अधोलिखितानां वस्तुनिष्ठप्रश्नानां समीचीनम् उत्तरं लिखत - $1 \times 40 = 40$

(i) भू .....

(क) वृद्धौ (ख) सत्तायाम्

(ग) ज्ञाने (घ) लाभे

(ii) स्पर्ध .....

(क) लोडने (ख) संघर्षे

(ग) हर्षे (घ) परिदेवने

(iii) दद .....

(क) दाने (ख) धारणे

(ग) आप्रवणे (घ) हिंसायाम्

(iv) गद .....

(क) आह्वाने (ख) संज्ञानो

(ग) व्यक्तायां वाचि (घ) समृद्धौ

(v) वदि .....

(क) अभिवादन स्तुत्योः (ख) अवयवे

(ग) गतौ (घ) आसेचने

(vi) मुद .....

(क) कल्याणे (ख) हर्षे

(ग) शुद्धौ (घ) बन्धने

(vii) स्वाद .....

(क) आस्वादने (ख) गत्याम्

(ग) चेष्टायाम् (घ) संघाते

(viii) अत .....

(क) भक्षणे (ख) रक्षणे

(ग) सातत्यगमने (घ) पाने

(ix) शुच .....

(क) प्रसादे (ख) शोके

(ग) प्रमादे (घ) विस्तारे

(x) व्रज .....

(क) संघाते (ख) श्लाधायाम्

(ग) गतौ (घ) विशरणे

(xi) पण .....

(क) भ्रमणे (ख) प्रतिबन्धे

(ग) कत्थने (घ) व्यवहारे स्तुतौ च

(xii) अय .....

(क) गतौ (ख) शब्दे

(ग) धारणे (घ) बन्धने

(xiii) शिक्ष .....

(क) सेवायाम् (ख) विद्योपादाने

(ग) बन्धने (घ) भाषणे

(xiv) जि .....

(क) पराजये (ख) सत्तायाम्

(ग) जये (घ) मदे

(xv) टुनदि .....

(क) एश्वर्ये (ख) पठने

(ग) गमने (घ) समृद्धौ

(xvi) भाष .....

(क) शब्दकुत्सायाम् (ख) प्रशंसायाम्

(ग) व्यक्तायां वाचि (घ) अव्यक्ते शब्दे

(xvii) ऊह .....

(क) वितर्के (ख) आदरे

(ग) जिज्ञासायाम् (घ) अन्वेषणे

(xviii) अर्ह .....

(क) माने (ख) पूजायाम्

(ग) दीप्तौ (घ) विलोडने

(xix) द्युत् .....

(क) प्रकाशे (ख) दीप्तौ

(ग) वरणे (घ) दीपने

(xx) हसे .....

(क) हसने (ख) शोके

(ग) स्मयने (घ) क्रन्दने

(xxi) वृधु .....

(क) सत्तायाम् (ख) वृद्धौ

(ग) गमने (घ) क्षरणे

(xxii) रमु .....

(क) मोदने (ख) रामे

(ग) क्रीडायाम् (घ) जल्पने

(xxiii) हृम् .....

(क) भरणे (ख) हरणे

(ग) रक्षणे (घ) भक्षणे

(xxiv) दाण् .....

(क) दाने (ख) आदाने

(ग) गतौ (घ) शोधने

(xxv) अद् .....

(क) भक्षणे (ख) रक्षणे

(ग) पाने (घ) आस्वादने

(xxvi) दुह .....

(क) उपवेशने (ख) प्रपूरणे

(ग) अप्रीतौ (घ) गतौ

(xxvii) पा .....

(क) भक्षणे (ख) पाके

(ग) रक्षणे (घ) तेजने

(xxviii) ष्टुम् .....

(क) स्तुतौ (ख) उपचये

(ग) आच्छादने (घ) स्वप्ने

(xxix) ख्या .....

(क) आख्याने (ख) प्रकथने

(ग) शयने (घ) लवने

(xxx) भा .....

(क) प्रकाशे (ख) दीप्तौ

(ग) भासने (घ) आलोचने

(xxxi) मृजूष् .....

(क) शुद्धौ (ख) त्यागे

(ग) पाके (घ) स्रवणे

(xxxii) जागृ .....

(क) निद्राक्षये (ख) शयने

(ग) स्वप्ने (घ) हसने

(xxxiii) या .....

(क) प्रापणे (ख) कर्षणे

(ग) शयने (घ) गतिनिवृत्तौ

(xxxiv) इङ् .....

(क) आस्वादने (ख) वर्जने

(ग) अध्ययने (घ) अभिगमने

(xxxv) शासु .....

(क) कान्तौ (ख) अनुशिष्टौ

(ग) प्राणने (घ) स्वप्ने

(xxxvi) वच .....

(क) मौने (ख) परिभाषणे

(ग) अव्यक्ते शब्दे (घ) शये

(xxxvii) चकास्ट .....

(क) दीप्तौ (ख) विलोडनें

(ग) शयने (घ) रागे

(xxxviii) मूल .....

(क) प्रतिष्ठायाम् (ख) अनादरे

(ग) साहसे (घ) प्रयत्ने

(xxxix) वा .....

(क) क्षरणे (ख) भरणे

(ग) गतिगन्धनयोः (घ) अवरोधे

(xl) तडि .....

(क) स्नेहे (ख) ताडने

(ग) स्मयने (घ) मारणे

निबन्धात्मको भागः

2. निम्नलिखितानां रूपाणां सिद्धिः करणीया – $5 \times 4 = 20$

(क) भवति अथवा बभूव

(ख) एधाञ्चक्रे अथवा पपाच

(ग) अत्ति अथवा जघान

(घ) शेते अथवा यौति

भाग 'ख'

(लघूत्तरात्मकाः प्रश्नाः)

3. धातुरूपो लेख्यः – $3 \times 2 = 6$

भू धातु लृट् लकारः, अद् धातु लट् लकारः

4. निम्नलिखित सूत्राणाम् अर्थनिर्देशो कार्यः – $2 \times 7 = 14$

लः कर्मणि च भावे चाऽकर्मकेभ्यः, सार्वधातुकार्धधातुकयोः, कुहोश्चुः, नित्यं ङितः, अदिप्रभृतिभ्यः शयः, अभ्यासाच्च, अतो दीर्घो यत्रि।